वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 14 | शुक्रवार 12 जून 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

18 देशों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में 25 अंतरराष्ट्रीय विभूतियों का सम्मान,

ऑस्ट्रेलिया की संसद में गूंजा हनुमान चालीसा का पाठ,

भारतीय राष्ट्रगान से हुआ भारत गौरव अवार्ड्स का आगाज

मेलबर्न (ऑस्ट्रेलिया). शाबाश इंडिया

ऑस्ट्रेलिया की ऐतिहासिक एवं प्रतिष्ठित पार्लियामेंट ऑफ विक्टोरिया के क्वीन्स हॉल में संस्कृति युवा संस्था द्वारा आयोजित भारत गौरव अवार्ड्स के 13वें संस्करण ने भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और वैश्विक भारतीय प्रतिभाओं का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया। समारोह का शुभारंभ भारत और ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रगान से हुआ, जिसके बाद मेहंदीपुर बालाजी धाम के महंत डॉ. नरेशपुरी जी महाराज ने हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ कराया। ऑस्ट्रेलिया की संसद में पहली बार हुए इस आयोजन ने उपस्थित अतिथियों को भावविभोर कर दिया और भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्वीकार्यता का सशक्त संदेश दिया। समारोह में भारत सहित 18 देशों से आए प्रतिनिधियों, राजनेताओं, उद्योगपतियों, शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, आध्यात्मिक गुरुओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली 25 अंतरराष्ट्रीय विभूतियों को भारत गौरव अवार्ड से सम्मानित किया गया। वर्ष 2012 से आयोजित हो रहे ये सम्मान आज भारतीय मूल के लोगों के लिए प्रतिष्ठित वैश्विक सम्मानों में अपनी विशेष पहचान बना चुके हैं। इससे पूर्व यह आयोजन लंदन की संसद, फ्रांस की सीनेट, संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय न्यूयॉर्क और दुबई जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी आयोजित किया जा चुका है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मेहंदीपुर बालाजी धाम के महंत डॉ. नरेशपुरी जी महाराज उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में विक्टोरिया सरकार के पर्यावरण मंत्री स्टीव डिमोपोलोस, विक्टोरियन मल्टीकल्चरल कमीशन के अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री विवियन गुयेन एएम, सांसद मेंग हेंग टैक तथा प्रयागराज महाकुंभ के मुख्य सलाहकार राकेश कुमार शुक्ला शामिल रहे। संस्कृति युवा संस्था के अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा ने कहा कि भारत गौरव अवाड्र्स का उद्देश्य उन विभूतियों को सम्मानित करना है जिन्होंने समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए असाधारण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया की संसद में इस आयोजन का होना प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का विषय है तथा भारतीय संस्कृति, योग, अध्यात्म, शिक्षा, विज्ञान और उद्यमिता आज विश्व स्तर पर नई पहचान बना रहे हैं। महंत डॉ. नरेशपुरी जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि हनुमान चालीसा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सेवा, साहस, सकारात्मकता और राष्ट्रभक्ति का संदेश देने वाला आध्यात्मिक मार्ग है। भगवान हनुमान का जीवन समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देता है। समारोह का विशेष आकर्षण विश्वविख्यात विज्ञापन विशेषज्ञ, पद्मभूषण एवं हाल ही में मरणोपरांत पद्मविभूषण से सम्मानित स्वर्गीय पीयूष पांडे को प्रदान किया गया भारत गौरव अवार्ड रहा। उपस्थित अतिथियों ने इसे भावपूर्ण श्रद्धांजलि बताया। कार्यक्रम संयोजक सुनील खेतपालिया ने बताया कि इस वर्ष सम्मानित होने वाली प्रमुख हस्तियों में महाराष्ट्र की प्रथम महिला अमृता फडणवीस, पद्मश्री सम्मानित सद्गुरु ब्रह्मेशानंद आचार्य स्वामी, ऑस्ट्रेलिया में भारतीय मूल की प्रथम सांसद कौशल्या वाघेला, उद्योगपति सनवर हर्षवाल, पद्मश्री सम्मानित शास्त्रीय गायिका डॉ. सोमा घोष, करौली शंकरदास जी महाराज, नरेन्द्र भाना, विवेक यादव, रीटा सगरानी, डॉ. अशोक जैन, सहर भामला, डॉ. जी. शनमुगा राजा, प्रो. डॉ. निर्मला एस. मौर्य, रणधीर ठाकुर, राजयोगी बी.के. सूर्या भाईजी, योगाचार्य ढाकाराम, संजय शर्मा, स्वामी अद्वैतानंद गिरी, डॉ. रतन विर्क, डॉ. सेतुरत्नम रवि, स्व. निर्मल कुमार जैन सेठी, राम सवानी, प्रदीप तिवारी तथा प्रवीण शर्मा सहित अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व शामिल रहे। सभी सम्मानित विभूतियों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र और भारत गौरव अलंकरण प्रदान किया गया। इस अवसर पर राकेश कुमार शुक्ला और सुनील खेतपालिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अतिथियों का स्वागत संस्कृति युवा संस्था के उपाध्यक्ष दिनेश शर्मा, सुनील जैन, ऑस्ट्रेलिया चैप्टर के चेयरमैन रवि शर्मा, अमित चांवला, सतीश शर्मा, ऋषभ शर्मा, अदित हरिया, नीलम मिश्रा, सौम्यता मिश्रा एवं ज्योति ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सुनील खेतपालिया ने किया, जबकि कार्यक्रम का संचालन सौम्यता मिश्रा ने किया। समारोह में बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीयों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, उद्यमियों, आध्यात्मिक गुरुओं और विभिन्न देशों से आए गणमान्य नागरिकों ने सहभागिता कर भारतीय संस्कृति, वैश्विक भारतीय समुदाय की उपलब्धियों और भारत-ऑस्ट्रेलिया मैत्री संबंधों का उत्सव मनाया।

अथाह भीड़ की आपाधापी में अपना कोई नहीं होता : अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

जालिमपुर (बांसवाड़ा, राजस्थान). शाबाश इंडिया। अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ की अहिंसा संस्कार पदयात्रा दीक्षा भूमि परतापुर से पुष्पगिरी तीर्थ की ओर निरंतर अग्रसर है। इसी क्रम में जालिमपुर में आयोजित धर्मसभा में आचार्य श्री ने श्रद्धालुओं को आत्मचिंतन, संतोष और आंतरिक सुख का संदेश देते हुए कहा कि ''अथाह भीड़ की आपाधापी में अंततः अपना कोई नहीं होता, इसलिए मनुष्य को सबसे पहले स्वयं को समय देना सीखना चाहिए।'' आचार्य श्री ने कहा कि मनुष्य ने अपने परिजनों और संसार को जितना समय दिया है, यदि उसका मात्र 10 प्रतिशत समय भी स्वयं को दिया होता तो शायद वह इतना दुखी, परेशान और अवसादग्रस्त नहीं होता। उन्होंने कहा कि जीवन के दो मार्ग हैं—एक भीतर का और दूसरा बाहर का। भीतर के मार्ग पर सुख, शांति, आनंद और आत्मिक उत्सव है, जबकि बाहर का मार्ग केवल भागदौड़, तनाव, उलझनों और अंतहीन संघर्ष से भरा हुआ है। उन्होंने कहा कि आज का जीवन कोल्हू के बैल की तरह हो गया है, जिसमें व्यक्ति निरंतर चलता तो रहता है, लेकिन उसे अपनी मंजिल का पता नहीं होता। आधुनिक मनुष्य न अपने व्यवसाय से संतुष्ट है, न नौकरी से, न पारिवारिक जीवन से और न ही स्वयं से। हर ओर असंतोष और बेचैनी का वातावरण दिखाई देता है। आचार्य श्री ने प्रश्न उठाया कि यदि किसी व्यक्ति से उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य पूछा जाए तो अधिकांश लोगों के पास उसका स्पष्ट उत्तर नहीं होता। इसी प्रकार यदि पूछा जाए कि कितनी संपत्ति अर्जित करने के बाद उसे वास्तविक सुख और शांति मिलेगी, तो वहां भी मौन ही दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि पहले सीमित साधनों में भी लोग अधिक संतुष्ट और प्रसन्न रहते थे, जबकि आज संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद मानसिक तनाव और अशांति बढ़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि धन कमाना गलत नहीं है, लेकिन धन को ही जीवन का अंतिम उद्देश्य बना लेना सबसे बड़ी भूल है। वास्तविक समाधान आत्मचिंतन, समझदारी और संतोष में निहित है। यदि मनुष्य स्वयं के भीतर झांकना सीख ले, तो जीवन की अधिकांश समस्याओं का समाधान स्वतः मिल सकता है। अन्यथा न जाने कितनी जिंदगियां यूं ही बीत जाएंगी, लेकिन मन की अशांति और परेशानियां समाप्त नहीं होंगी।

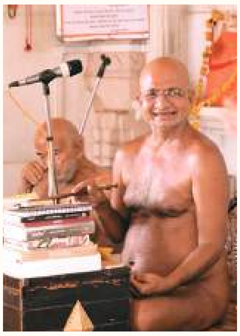

अद्भुत श्री तुलसी चरितायणम का भव्य विमोचन, मानस जगत में हर्ष की लहर

सिरकट्टी. कासं। 10 जून 2026 को सिरकट्टी आश्रम स्थित मानस मंच आध्यात्मिक चेतना, भक्ति और साहित्य साधना के अनुपम संगम का साक्षी बना, जहां मानस विशारद श्री भेखलाल चंद्राकर ''बी.आर. ब्रह्मांश'' की प्रतिष्ठित महाकाव्यात्मक कृति ''अद्भुत श्री तुलसी चरितायणम'' का संतजनों, विद्वानों और मानस प्रेमियों की गरिमामयी उपस्थिति में भव्य विमोचन संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि इस दिव्य कृति का पूर्व में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के करकमलों से भी लोकार्पण हो चुका है। सिरकट्टी आश्रम में मानस साधकों और रामभक्तों के मध्य पुनः इसके विमोचन से पूरे मानस जगत में विशेष उत्साह और आनंद का वातावरण देखने को मिला। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के मानस जगत के वंदनीय पुरोधा नंद कुमार साहू ने कृति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''अद्भुत श्री तुलसी चरितायणम केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन, साधना और दिव्य प्रेम का आध्यात्मिक दस्तावेज है। यह प्रेम सांसारिक आकर्षण का नहीं, बल्कि निर्मल, निष्कलुष, पावन और लोकमंगलकारी भक्ति का प्रतीक है। तुलसी का प्रेम आत्मा को ईश्वर से जोड़ने वाला प्रेम है, जो मनुष्य को मर्यादा, करुणा, समर्पण और राममय जीवन की ओर अग्रसर करता है।'' उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह कृति आने वाली पीढ़ियों के लिए तुलसी साहित्य और मानस परंपरा की अमूल्य धरोहर सिद्ध होगी। इस अवसर पर लेखक की सुपुत्री सुश्री ऋचा चंद्राकर भी उपस्थित रहीं। राष्ट्रपति पुरस्कृत डॉ. मुन्नालाल देवदास, राज मानस संघ के संरक्षक अर्जुन पुरी गोस्वामी, मानस मनीषी राम राजेश साहू, मानस पुरोधा पीला राम शर्मा, मानस मर्मज्ञ रामचंद्र विश्वकर्मा, मानस पुरोधा बलराम साहू (धर्मी), मानस प्रेमी दीपक मानिकपुरी, मानस मर्मज्ञ पंडित चेतन दुलार, मानस मर्मज्ञ खुमान सिंह ध्रुव, मानस पुरोधा बालेंद्र साहू तथा प्रेमलाल साहू सहित अनेक विद्वानों एवं मानस प्रेमियों के करकमलों से कृति का विधिवत विमोचन किया गया। विमोचन उपरांत उपस्थित विद्वानों ने एक स्वर में कृति की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए इसे तुलसी साहित्य की परंपरा में एक महत्वपूर्ण और संग्रहणीय योगदान बताया। वक्ताओं ने कहा कि यह ग्रंथ गोस्वामी तुलसीदास जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, भक्ति, दर्शन और लोकमंगलकारी चिंतन का शोधपरक एवं प्रेरणादायी प्रस्तुतीकरण है, जो साहित्य, संस्कृति और अध्यात्म के क्षेत्र में नई दिशा प्रदान करेगा। सिरकट्टी आश्रम का मानस मंच इस ऐतिहासिक अवसर पर भक्ति, साहित्य और संस्कृति के अनुपम संगम का केंद्र बना रहा। कृति के विमोचन से उपस्थित जनसमुदाय भावविभोर हो उठा और पूरा परिसर ''जय श्रीराम'' तथा ''गोस्वामी तुलसीदास जी की जय'' के जयघोषों से गुंजायमान हो गया।

संजीवनी रक्तदान संगठन के युवाओं ने किया रक्तदान

सोनल जैन की रिपोर्ट

भिंड. शाबाश इंडिया। संजीवनी रक्तदान संगठन के युवा सदस्यों ने जरूरतमंद मरीजों की सहायता के लिए रक्तदान कर मानवता और सेवा का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया। संगठन की सदस्य कु. स्तुति जैन तथा सदस्य रवि बाजपेई और संदीप प्रजापति ने अलग-अलग मरीजों के लिए स्वेच्छा से रक्तदान कर उनके उपचार में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। संगठन के संस्थापक बबलू सिंधी ने कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा मानव सेवा का कार्य है, क्योंकि इससे किसी जरूरतमंद व्यक्ति को नया जीवन मिल सकता है। उन्होंने युवाओं से नियमित रूप से रक्तदान करने और समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। संगठन के पदाधिकारियों ने बताया कि समय पर रक्त उपलब्ध होने से मरीजों को राहत मिली और उनके परिजनों ने रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संजीवनी रक्तदान संगठन लगातार जरूरतमंद मरीजों को रक्त उपलब्ध कराने के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है और भविष्य में भी यह सेवा अभियान निरंतर जारी रहेगा। संगठन ने सभी रक्तदाताओं के सेवाभाव और सामाजिक दायित्व के प्रति समर्पण की सराहना करते हुए उन्हें मानवता का सच्चा प्रहरी बताया।

चार माह ऋषि एवं कृषि दोनों के लिए महत्वपूर्ण, समाज को एकजुट रहने की आवश्यकता : आचार्य विहर्ष सागर महाराज

पुण्य के प्रभाव से होता है चातुर्मास, धर्म एवं चरित्र ही जीवन को बनाते हैं सार्थक

ब्यावर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य जीवन में पुण्य का अत्यंत महत्व है। पुण्य ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करती है और अंततः अरिहंत पद तक पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने भावों को पवित्र, मन को निर्मल और आचरण को श्रेष्ठ बनाए रखने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने एक रोचक उदाहरण देते हुए कहा कि यदि 12 में से 4 घटाए जाएं तो सामान्य रूप से उत्तर 8 होता है, लेकिन धर्म और जीवन के संदर्भ में इसका अर्थ अलग है। वर्ष के चार महीने ऋषियों और कृषि दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। साधु-संतों के लिए यही चातुर्मास का काल होता है, जबकि किसानों के लिए यही समय कृषि कार्यों की आधारशिला बनता है। इस दृष्टि से ये चार महीने समाज, संस्कृति और आध्यात्मिक जीवन के लिए विशेष महत्व रखते हैं। आचार्य श्री ने कहा कि साधुओं का चातुर्मास किसी व्यक्ति विशेष की इच्छा से नहीं, बल्कि उस क्षेत्र के लोगों के पुण्य के प्रभाव से होता है। जहां पुण्य का उदय प्रबल होता है, वहीं चातुर्मास का सौभाग्य प्राप्त होता है और श्रद्धालुओं को धर्म आराधना, स्वाध्याय, सेवा तथा साधु-संतों के सान्निध्य का दुर्लभ अवसर मिलता है। उन्होंने कहा कि साधु-संतों को आहार कराने का अवसर भी पुण्य के उदय से ही प्राप्त होता है। पुण्य और कर्म के महत्व को स्पष्ट करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि संसार में प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तु अपने कर्मों के अनुसार परिणाम प्राप्त करती है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि पत्थर भी अपने भाग्य और पुण्य के अनुसार स्थान प्राप्त करता है। कोई पत्थर भगवान की प्रतिमा बनकर मंदिर में प्रतिष्ठित होता है तो कोई भवनों और सड़कों के निर्माण में उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी अपने कर्मों, संस्कारों और भावों के आधार पर जीवन में ऊंचाइयों को प्राप्त करता है। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता, बल्कि अपने पुरुषार्थ, चरित्र, संस्कार और सत्कर्मों से महानता अर्जित करता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को आत्मचिंतन और आत्मविकास को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। आचार्य श्री ने कहा कि परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है। बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था जीवन के विभिन्न पड़ाव हैं, जो निरंतर परिवर्तन का संदेश देते हैं। यदि मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य समझ ले तो उसका जीवन कल्याणकारी बन जाता है, अन्यथा वही जीवन अनर्थ की दिशा में भी जा सकता है। इसलिए धर्म, संयम, सदाचार और चरित्र को जीवन का आधार बनाना आवश्यक है। उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि मनुष्य को केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। पुण्य का संचय केवल दान से ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठ विचारों, मधुर व्यवहार, सेवा, करुणा और धर्म आराधना से भी होता है। आचार्य श्री ने कहा कि मनुष्य को स्वयं को भगवान और गुरु की कृपा का पात्र बनाने का प्रयास करना चाहिए। जब व्यक्ति संसार की भागदौड़ से थक जाता है, तब उसे गुरु और भगवान की शरण का वास्तविक महत्व समझ में आता है। गुरु का मार्गदर्शन ही जीवन को सही दिशा प्रदान कर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। प्रवचन के अंत में उन्होंने समाज को एकजुट रहने का संदेश देते हुए कहा कि समाज की वास्तविक शक्ति उसकी एकता में निहित होती है। यदि समाज छोटे-छोटे समूहों में विभाजित हो जाएगा तो उसकी सामूहिक शक्ति कमजोर पड़ जाएगी। इसलिए सभी को प्रेम, सद्भाव और सहयोग की भावना के साथ धर्म एवं समाजहित के कार्यों में मिलकर आगे बढ़ना चाहिए। दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता राकेश जैन ने बताया कि आचार्य श्री के मंगल सान्निध्य में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु धर्मसभा में पहुंचकर दर्शन एवं प्रवचन का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। वहीं दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष सुशील बड़जात्या एवं मंत्री रितेश फागीवाला ने बताया कि अजमेर से पधारे श्रद्धालुओं का समाज की ओर से स्वागत एवं सम्मान किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री विहर्ष सागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री विजयेश सागर जी महाराज के सान्निध्य में ब्यावर जैन समाज एवं अजमेर से आए श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री की गुरुपूजा संपन्न की। मुनि श्री विजयेश सागर जी महाराज ने भी गुरु भक्ति, धर्म साधना एवं आत्मकल्याण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए गुरु-शिष्य परंपरा की महिमा का वर्णन किया। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और सभी ने आचार्य श्री एवं मुनि संघ के प्रेरणादायी प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया।

वागोल में 23 फीट ऊंची भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा का पंचामृत महामस्तकाभिषेक संपन्न

अजीत कोठिया डडूका की रिपोर्ट

वागोल. शाबाश इंडिया। वागोल स्थित दिगंबर जैन मंदिर में बुधवार को अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ की 23 फीट ऊंची खड्गासन प्रतिमा का भव्य पंचामृत महामस्तकाभिषेक श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। दिगंबर जैन बीसपंथी समाज के अध्यक्ष जयंतीलाल सेठ ने बताया कि भगवान पार्श्वनाथ की शांतिधारा का सौभाग्य कुशलगढ़ निवासी आशीषझसुरेंद्र पिंडारमा परिवार को प्राप्त हुआ। वहीं खड्गासन प्रतिमा पर प्रथम कलश से शांतिधारा विजयलाल कोठारी के समर्पण एवं अर्पण परिवार, कुशलगढ़ द्वारा संपन्न कराई गई। महामस्तकाभिषेक के उपरांत आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने त्याग, तपस्या और आत्मशुद्धि के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य आत्मकल्याण है। भोग-विलास की अंधी दौड़ से हटकर त्याग, संयम और तपस्या का मार्ग अपनाने से ही आत्मा का वास्तविक उत्थान संभव है। आचार्य श्री ने श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि वे सांसारिक आकर्षणों में उलझने के बजाय धर्म, साधना और आत्मचिंतन को जीवन का आधार बनाएं, जिससे जीवन सार्थक और कल्याणकारी बन सके। धर्मसभा के पश्चात सायंकाल आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ससंघ का मंगल विहार दाहोद की ओर हुआ। समाज अध्यक्ष जयंतीलाल सेठ ने जानकारी दी कि आगामी 17 जून 2026 को दाहोद में आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं आचार्य श्री सुनील कुमार जी महाराज के ससंघ का भव्य महामिलन आयोजित होगा, जिसे लेकर समाजजनों में विशेष उत्साह बना हुआ है।

राजनीति

ममता बनर्जी और टीएमसी के सामने बढ़ती चुनौतियां

सौरभ वार्ष्णेय

पश्चिम बंगाल की राजनीति में लंबे समय तक मजबूत स्थिति बनाए रखने वाली तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) आज कई राजनीतिक और संगठनात्मक चुनौतियों का सामना करती दिखाई दे रही है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व में पार्टी ने वर्षों तक राज्य की सत्ता पर प्रभावी पकड़ बनाए रखी, लेकिन समय के साथ सत्ता-विरोधी माहौल, संगठनात्मक दबाव और नेतृत्व संबंधी सवालों ने नई परिस्थितियां पैदा कर दी हैं। सबसे प्रमुख कारण लंबे समय तक सत्ता में रहने के बाद उत्पन्न होने वाली स्वाभाविक सत्ता-विरोधी भावना है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि किसी भी दल के लंबे शासनकाल में जनता की अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं और छोटी-बड़ी प्रशासनिक कमियां भी बड़े मुद्दे बन जाती हैं। भ्रष्टाचार के आरोप, कथित 'कट मनी' संस्कृति और विभिन्न विवादों ने भी विपक्ष को सरकार पर हमला करने का अवसर दिया है। टीएमसी की सबसे बड़ी ताकत हमेशा ममता बनर्जी का व्यक्तिगत जनाधार रहा है। हालांकि, समय के साथ पार्टी में नेतृत्व के केंद्रीकरण और निर्णय प्रक्रिया को लेकर सवाल उठने लगे हैं। संगठन के भीतर विभिन्न स्तरों पर विचारों के मतभेद सामने आने की चर्चाएं समय-समय पर होती रही हैं, जिससे नेतृत्व के सामने संतुलन बनाए रखने की चुनौती बढ़ी है। संगठनात्मक स्तर पर भी पार्टी को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय इकाइयों में समन्वय की कमी, कार्यकर्ताओं की नाराजगी और बदलते राजनीतिक समीकरणों ने संगठन को अधिक सक्रिय और जवाबदेह बनाने की आवश्यकता महसूस कराई है। राजनीतिक विशेषज्ञ मानते हैं कि किसी भी क्षेत्रीय दल के लिए मजबूत संगठन उसकी सबसे बड़ी पूंजी होता है और उसमें कमजोरी चुनावी प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा, पार्टी के कुछ नेताओं पर लगे आरोपों और विभिन्न जांचों ने भी टीएमसी की छवि पर असर डाला है। विपक्ष लगातार इन मुद्दों को जनता के बीच उठा रहा है, जबकि पार्टी नेतृत्व अपनी स्थिति स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा है। ऐसे विवादों का राजनीतिक प्रभाव केवल चुनाव तक सीमित नहीं रहता, बल्कि संगठन के भीतर विश्वास और मनोबल पर भी पड़ता है।

संपादकीय

12 वर्षों में विकास की नई दिशा

26 मई 2014 को जब नरेंद्र मोदी ने भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली, तब उन्होंने ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास'' का संकल्प देश के सामने रखा। पिछले 12 वर्षों में इस दृष्टि को विभिन्न नीतियों और योजनाओं के माध्यम से मूर्त रूप देने का प्रयास किया गया है। इस अवधि में भारत ने अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचे, डिजिटल प्रौद्योगिकी, सामाजिक कल्याण और वैश्विक कूटनीति के क्षेत्रों में उल्लेखनीय बदलाव

देखे हैं। आर्थिक मोर्चे पर मोदी सरकार ने कई बड़े सुधार लागू किए। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) ने देश को एकीकृत कर व्यवस्था प्रदान करते हुए ''एक राष्ट्र, एक बाजार'' की अवधारणा को मजबूत किया। विमुद्रीकरण ने नकदी आधारित अर्थव्यवस्था और काले धन पर नियंत्रण की दिशा में व्यापक बहस को जन्म दिया। वहीं ''मेक इन इंडिया'' और ''आत्मनिर्भर भारत'' अभियानों ने विनिर्माण तथा स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने का प्रयास किया। कोविड-19 महामारी के कठिन दौर में भी भारत ने दवा, रक्षा और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में भी व्यापक निवेश देखने को मिला। राष्ट्रीय राजमार्गों के विस्तार, वंदे भारत ट्रेनों की शुरूआत, समर्पित माल गलियारों, बुलेट ट्रेन परियोजना और उड़ान योजना के माध्यम से परिवहन नेटवर्क को आधुनिक बनाने का प्रयास किया गया। स्मार्ट सिटी मिशन, अमृत योजना और जल जीवन मिशन ने शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल, स्वच्छता और आधारभूत सुविधाओं के विस्तार को गति दी। स्वच्छ भारत अभियान के तहत करोड़ों शौचालयों के निर्माण ने स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। सामाजिक कल्याण योजनाओं के माध्यम से सरकार ने गरीब और वंचित वर्गों तक सीधे लाभ पहुंचाने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत करोड़ों महिलाओं को एलपीजी कनेक्शन मिले, जबकि आयुष्मान भारत योजना ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को स्वास्थ्य सुरक्षा का दायरा उपलब्ध कराया। पीएम-किसान सम्मान निधि, जन धन योजना, मुद्रा योजना और स्टैंड-अप इंडिया जैसी पहल ने वित्तीय समावेशन तथा स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने में योगदान दिया। विदेश नीति के क्षेत्र में भारत की सक्रियता उल्लेखनीय रही। 'एक्ट ईस्ट' नीति, 'नेबरहुड फर्स्ट' दृष्टिकोण, जी20 की सफल मेजबानी और विभिन्न वैश्विक मंचों पर बढ़ती भागीदारी ने भारत की अंतरराष्ट्रीय भूमिका को मजबूत किया। योग और आयुर्वेद को वैश्विक पहचान दिलाने में भी भारत की पहल प्रभावशाली रही। डिजिटल इंडिया अभियान ने आधार, यूपीआई और ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से करोड़ों नागरिकों को डिजिटल व्यवस्था से जोड़ा। कोविड-19 महामारी के दौरान बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान ने भारत की प्रशासनिक क्षमता और स्वास्थ्य अवसंरचना को भी वैश्विक स्तर पर चर्चा का विषय बनाया। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

लोभ मानव जीवन का सबसे बड़ा शत्रु

कांतिलाल मांडोत

मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति, नैतिक मूल्यों का पालन और समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन भी है। इच्छाएं जीवन को गति देती हैं और प्रगति के लिए प्रेरित करती हैं, किंतु जब वे मर्यादा की सीमा लांघकर असीम लालसा में बदल जाती हैं, तब उनका स्वरूप लोभ बन जाता है। यही लोभ मनुष्य के विवेक, संतुलन और सद्गुणों का सबसे बड़ा शत्रु बनकर उसके पतन का कारण बनता है। लोभ का अर्थ है आवश्यकता से अधिक पाने की अनियंत्रित इच्छा। सामान्य आकांक्षाएं स्वाभाविक हैं, परंतु जब व्यक्ति संग्रह, स्वार्थ और भौतिक संपत्ति को ही जीवन का अंतिम लक्ष्य मान लेता है, तब उसके भीतर संतोष समाप्त होने लगता है। लोभी व्यक्ति के पास कितना भी धन, वैभव या प्रतिष्ठा क्यों न हो, उसकी इच्छाओं का अंत नहीं होता। यही असंतोष उसके मानसिक तनाव और अशांति का मूल कारण बन जाता है। इसीलिए सभी धर्मों और महान विचारकों ने लोभ को पापों की जड़ बताया है। लालच के प्रभाव में व्यक्ति सही और गलत का अंतर भूल जाता है और अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का अहित करने से भी नहीं हिचकता। चोरी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी, शोषण और विश्वासघात जैसी अनेक सामाजिक बुराइयों के पीछे किसी न किसी रूप में लालच ही कार्य करता है। जब धन जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बन जाता है, तब दया, करुणा, सत्य और ईमानदारी जैसे गुण धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं। आज के भौतिकवादी युग में यह समस्या और भी गंभीर हो गई है। सफलता का आकलन अक्सर केवल आर्थिक संपन्नता से किया जाता है, जिसके कारण लोग अधिक से अधिक धन अर्जित करने की होड़ में लगे रहते हैं। इस अंधी प्रतिस्पर्धा का प्रभाव पारिवारिक संबंधों और सामाजिक मूल्यों पर भी पड़ता है। व्यक्ति बाहरी रूप से समृद्ध दिखाई देता है, लेकिन भीतर से असुरक्षित और असंतुष्ट बना रहता है। एक प्रसिद्ध कथा इस सत्य को स्पष्ट करती है। एक धनी व्यापारी को वरदान मिला कि उसके स्पर्श से हर वस्तु सोने में बदल जाएगी। प्रारंभ में वह अत्यंत प्रसन्न हुआ, लेकिन जब उसके स्पर्श से उसकी प्रिय पत्नी भी स्वर्ण प्रतिमा बन गई, तब उसे अपनी भूल का एहसास हुआ। उस क्षण उसने समझा कि धन और सोना जीवन की वास्तविक खुशियों का स्थान नहीं ले सकते। प्रेम, अपनापन और मानवीय संवेदनाएं किसी भी भौतिक संपत्ति से कहीं अधिक मूल्यवान हैं। वास्तव में मनुष्य की आवश्यकताएं सीमित होती हैं, जबकि उसकी लालसाएं असीमित हो सकती हैं। यदि इच्छाओं पर नियंत्रण न रखा जाए तो वे कभी समाप्त नहीं होतीं। इसलिए संतोष को जीवन का सबसे बड़ा धन कहा गया है। संतोष का अर्थ प्रयास छोड़ देना नहीं, बल्कि अपनी उपलब्धियों के प्रति कृतज्ञ रहना और अनैतिक साधनों से अधिक पाने की इच्छा से बचना है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी लोभ मनुष्य को उसके वास्तविक उद्देश्य से दूर कर देता है। आत्मिक शांति बाहरी वस्तुओं से नहीं, बल्कि संयम, सदाचार और आत्मज्ञान से प्राप्त होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह धन को साधन माने, साध्य नहीं। सेवा, परोपकार, दान और सहयोग जैसे गुण लोभ पर नियंत्रण पाने में सहायक होते हैं और समाज को अधिक मानवीय बनाते हैं। निस्संदेह, लोभ मानव जीवन का घातक दुर्गुण है, जबकि संतोष, संयम और नैतिकता सच्चे सुख तथा स्थायी सफलता का आधार हैं। जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखना सीख लेता है।

वाणी चेस क्लब के नि:शुल्क शतरंज प्रशिक्षण शिविर में दिखा रोमांच और प्रेरणा का अद्भुत संगम

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानसरोवर स्थित जय श्री ज्वेलर्स परिसर में वाणी चेस क्लब द्वारा संचालित नि:शुल्क शतरंज प्रशिक्षण शिविर में शनिवार को रोमांच, उत्साह और प्रेरणा का अनूठा संगम देखने को मिला। क्लब की संस्थापक युवा शतरंज खिलाड़ी वाणी जैन के मार्गदर्शन में संचालित इस शिविर में बच्चों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। वाणी चेस क्लब के अध्यक्ष जिनेश कुमार जैन ने बताया कि शिविर में फीडे मान्यता प्राप्त कोच विक्रम सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने एक साथ 12 बोर्डों पर बच्चों के विरुद्ध सिमल मुकाबला खेला। हालांकि उन्होंने सभी मुकाबलों में जीत दर्ज करते हुए बच्चों को चेकमेट किया, लेकिन खेल के दौरान प्रतिभागियों ने अपनी उत्कृष्ट रणनीति, एकाग्रता और आत्मविश्वास से उन्हें कई बार गंभीरता से सोचने के लिए विवश कर दिया। मुकाबले के दौरान कई ऐसे क्षण आए जब ऐसा प्रतीत हुआ कि विक्रम सिंह छोटे बच्चों के साथ नहीं, बल्कि अनुभवी खिलाड़ियों के विरुद्ध खेल रहे हों। बच्चों की खेल समझ, रणनीतिक सोच और जीतने की ललक ने उपस्थित अभिभावकों एवं शतरंज प्रेमियों को भी प्रभावित किया। पूरे हॉल में रोमांच और उत्साह का माहौल बना रहा। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय आर्बिटर एवं शतरंज जगत की प्रतिष्ठित हस्ती भगवती प्रसाद शर्मा भी बच्चों के बीच पहुंचे। शतरंज जगत में 'भीष्म पितामह' के नाम से प्रसिद्ध भगवती प्रसाद शर्मा ने बच्चों को खेल की बारीकियों से अवगत कराया। उन्होंने तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ अनुशासन, धैर्य, एकाग्रता, सकारात्मक सोच और खेल भावना जैसे जीवन मूल्यों पर भी विशेष जोर दिया। शिविर में एडवोकेट पियूष शर्मा भी बच्चों को शतरंज की विभिन्न रणनीतियों और एंडगेम तकनीकों का प्रशिक्षण दे रहे हैं। वे दो ऊंटों (बिशप), एक हाथी (रूक) और एक रानी (क्वीन) की सहायता से चेकमेट करने सहित अन्य महत्वपूर्ण जीत की स्थितियों को सरल एवं प्रभावी ढंग से समझा रहे हैं। उनके मार्गदर्शन से बच्चों की रणनीतिक क्षमता और खेल की समझ लगातार विकसित हो रही है। वहीं दीपक राव भी अपने अनुभव और खेल कौशल के माध्यम से प्रतिभागियों को शतरंज की विभिन्न ओपनिंग, आक्रमण एवं बचाव की रणनीतियां, मोहरों के प्रभावी उपयोग तथा खेल के दौरान सही निर्णय लेने की कला सिखा रहे हैं। उनकी व्यावहारिक और रोचक शिक्षण शैली बच्चों को खेल की गहराइयों को समझने में मदद कर रही है। वाणी चेस क्लब का उद्देश्य केवल शतरंज सिखाना ही नहीं, बल्कि बच्चों में तार्किक सोच, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और व्यक्तित्व विकास को भी प्रोत्साहित करना है। क्लब द्वारा आयोजित यह नि:शुल्क प्रशिक्षण शिविर उभरती प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। शिविर का यह प्रेरणादायक और रोमांचक सत्र बच्चों, अभिभावकों तथा उपस्थित सभी शतरंज प्रेमियों के लिए लंबे समय तक स्मरणीय रहेगा।

रायपुर राजभवन में जैन समाज प्रतिनिधिमंडल की गरिमामयी भेंट, समाज हित के मुद्दों पर हुई सार्थक चर्चा

रायपुर. शाबाश इंडिया

श्री समग्र जैन समाज भारत फेडरेशन के प्रतिनिधिमंडल ने छत्तीसगढ़ के माननीय राज्यपाल श्री रमेन डेका से राजभवन, रायपुर में शिष्टाचार भेंट कर जैन समाज से जुड़े विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल का भगवान महावीर स्वामी का पावन चित्र, आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज की आध्यात्मिक पुस्तक, माला, दुपट्टा एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया। प्रतिनिधिमंडल में फेडरेशन के संरक्षक श्री राकेश कुमार जैन, मंत्री श्री रोशन जैन, संयोजक श्री आशीष राजकुमार अजमेरा तथा रायपुर संयोजक श्री मनोज कुमार जैन शामिल रहे। मुलाकात के दौरान जैन समाज के धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। साथ ही जैन साधु-संतों की सुरक्षा, धार्मिक स्वतंत्रता तथा जैन समाज के संरक्षण के लिए विशेष अधिनियम बनाए जाने संबंधी मांग-पत्र भी राज्यपाल को सौंपा गया। प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि जैन साधु-संत भारतीय संस्कृति, अहिंसा, शांति और नैतिक मूल्यों के संवाहक हैं। ऐसे में उनकी सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित करना समाज तथा राष्ट्र दोनों के हित में अत्यंत आवश्यक है।

माननीय राज्यपाल ने प्रतिनिधिमंडल की भावनाओं को गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ सुना तथा जैन समाज द्वारा किए जा रहे सकारात्मक कार्यों की सराहना करते हुए आवश्यक सहयोग एवं सकारात्मक पहल का आश्वासन दिया। फेडरेशन के अनुसार यह गरिमामयी भेंट जैन समाज के हितों, धार्मिक संरक्षण और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। संगठन के अध्यक्ष श्री साहिल जैन ने इस पहल के लिए समस्त प्रतिनिधिमंडल को हार्दिक अनुमोदना एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि समाज हित में ऐसे सकारात्मक प्रयास निरंतर होते रहने चाहिए, ताकि जैन समाज संगठित होकर विकास और प्रगति के नए आयाम स्थापित कर सके।

श्री समग्र जैन समाज भारत फेडरेशन
''एकता-सेवा-संस्कार''

यज्ञ में आहुतियां देकर सर्वकल्याण की कामना, रासलीला में बालकृष्ण की लीलाओं ने मोहा मन

हनुमान टेकरी आश्रम में सप्त दिवसीय श्री विष्णु लक्ष्मी महायज्ञ का चौथा दिन श्रद्धा और भक्ति के माहौल में संपन्न

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

पुरुषोत्तम मास के पावन अवसर पर भगवान श्रीहरि एवं माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के उद्देश्य से छोटी हरणी स्थित हनुमान टेकरी आश्रम में महंत बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में आयोजित प्रथम सप्त दिवसीय 11 कुंडीय श्री विष्णु लक्ष्मी महायज्ञ के चौथे दिन गुरुवार को भी श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां देकर विश्व शांति एवं सर्वकल्याण की कामना की। महायज्ञ के साथ श्री राधा रासेश्वरी रासलीला मंडल, श्रीवृंदावन धाम (मथुरा) द्वारा प्रस्तुत भक्तिमय रासलीला ने श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। प्रातःकालीन सत्र में सुबह 8 बजे महंत बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में श्री शारदा सनातन परमार्थ न्यास के वेदाचार्य पंडित मुकेश शास्त्री के निर्देशन में वैदिक विधि-विधान से यज्ञ अनुष्ठान संपन्न हुए। प्रत्येक यज्ञ वेदी पर यजमानों के साथ लक्ष्मी स्वरूपा कन्याओं ने भी आहुतियां अर्पित कर सुख-समृद्धि एवं लोककल्याण की कामना की। यज्ञाचार्य ने बताया कि यज्ञ प्रारंभ होने से पूर्व सभी यज्ञकर्ताओं का पवित्रीकरण कर पंचगव्य का प्राशन कराया गया। इसके बाद यज्ञ मंडप में प्रवेश कर आहूत देवताओं का पूजन किया गया तथा गौमाता का पंचामृत से अभिषेक एवं विधिवत पूजन संपन्न हुआ। श्रद्धालुओं ने गौमाता के दिव्य मंत्रों के साथ हवन में आहुतियां अर्पित कीं। कार्यक्रम का समापन आरती, पुष्पांजलि, यज्ञ मंडप की परिक्रमा और प्रसाद वितरण के साथ हुआ। आयोजकों ने बताया कि महायज्ञ 14 जून तक प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से दोपहर 12 बजे तक आयोजित किया जाएगा, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग ले रहे हैं। बुधवार रात्रि आयोजित रासलीला में श्री राधा रासेश्वरी रासलीला मंडल, श्रीवृंदावन धाम (मथुरा) के कलाकारों ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का सजीव एवं भावपूर्ण मंचन प्रस्तुत किया। मंडल के दामोदरदास काठियाबाबा के निर्देशन में माखन चोरी, गोपियों की शिकायत और यशोदा मैया के वात्सल्य से जुड़े प्रसंगों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंडल के राजू स्वामी ने बताया कि 16 कलाकारों की टीम इस रासलीला में भाग ले रही है, जिसमें यशोदा, राधा और गोपियों सहित महिला पात्रों का अभिनय भी पुरुष कलाकारों द्वारा किया जा रहा है। कलाकारों की जीवंत प्रस्तुति और भावपूर्ण अभिनय को श्रद्धालुओं ने खूब सराहा। रासलीला के शुभारंभ पर विशिष्ट अतिथि इंद्रजीत गुर्जर, चांदमल सोनी, ठाकुर तेजसिंह, रामस्वरूप जाट, देवीलाल भदाला, उदयलाल जाट, शिवराज, नंदकिशोर सोनी, अशोक कोटड़ी, सत्तू प्रजापत, अज्जू सिंह सहित अन्य अतिथियों ने ठाकुरजी की आरती कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आयोजकों के अनुसार रासलीला का मंचन प्रतिदिन रात्रि 8 बजे से हनुमान टेकरी आश्रम परिसर में किया जा रहा है, जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्तिभाव के साथ शामिल होकर भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओं का आनंद ले रहे हैं।

इन्द्रियों की सीमा है, आत्मा का ज्ञान असीम है : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

आत्मा ही वास्तविक ज्ञाता और द्रष्टा, इन्द्रियां केवल ज्ञान प्राप्ति के साधन : युवाचार्य

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी महाराज ने कहा कि इन्द्रियां अचेतन पुद्गल हैं, जबकि आत्मा चेतन द्रव्य है। जानने और देखने का स्वभाव आत्मा का है, इन्द्रियों का नहीं। इन्द्रियां केवल ज्ञान प्राप्ति के साधन हैं, वास्तविक ज्ञाता और द्रष्टा आत्मा ही है। यश विहार में आयोजित आगम स्वाध्याय के दौरान साधु-साध्वीवृंद एवं श्रावक-श्राविकाओं के प्रश्नों का उत्तर देते हुए युवाचार्यश्री ने जैन आगम दर्शन का सूक्ष्म विवेचन किया। उन्होंने कहा कि आत्मा का स्वभाव 'उपयोग' है और उपयोग का अर्थ है जानना तथा देखना। जब आत्मा इन्द्रियों एवं मन के माध्यम से बाह्य पदार्थों का ग्रहण करती है, तब ज्ञान की प्रक्रिया संपन्न होती है। इसलिए यह मान लेना कि आंख देखती है, कान सुनते हैं अथवा इन्द्रियां स्वयं जानती हैं, आगमिक दृष्टि से पूर्ण सत्य नहीं है। आंख, कान और अन्य इन्द्रियां तो अचेतन उपकरण हैं, जिनके माध्यम से चेतन आत्मा ज्ञान प्राप्त करती है। उन्होंने बताया कि मति ज्ञान एवं श्रुत ज्ञान की प्राप्ति इन्द्रियों और मन के निमित्त से होती है, किंतु ज्ञान का वास्तविक आश्रय आत्मा ही रहती है। यदि आत्मा का उपयोग सक्रिय न हो तो खुली आंखों से देखने पर भी वस्तु का यथार्थ ज्ञान संभव नहीं होता। कई बार व्यक्ति किसी वस्तु के सामने उपस्थित होने के बावजूद उसका ध्यान अन्यत्र होने के कारण उसे देख नहीं पाता। यह सिद्ध करता है कि केवल इन्द्रियां पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि आत्मा का उपयोग और मन की सहभागिता भी आवश्यक है। युवाचार्यश्री ने कहा कि इन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान परोक्ष होता है, इसलिए आंखों से देखा गया प्रत्येक दृश्य अंतिम सत्य नहीं माना जा सकता। दृष्टिभ्रम, परिस्थितियों और सीमित ग्रहण क्षमता के कारण इन्द्रियां यथार्थ को पूर्ण रूप से नहीं पकड़ पातीं। यही कारण है कि जैन आगम सत्य की पहचान के लिए केवल इन्द्रियजन्य अनुभव पर नहीं, बल्कि विवेक, तत्त्वचिंतन और अनेकांत दृष्टि पर विशेष बल देते हैं। उन्होंने आगे कहा कि जैन आगमों में आत्मा को ज्ञाता, द्रष्टा एवं चेतन सत्ता माना गया है। कर्मावरणों के कारण जीव का अनंत ज्ञान और अनंत दर्शन पूर्ण रूप से प्रकट नहीं हो पाता। साधना, स्वाध्याय, संयम और आत्मचिंतन के माध्यम से जब कर्मावरण क्षीण होते हैं, तब आत्मा का ज्ञानस्वरूप अधिकाधिक प्रकाशित होने लगता है।

आध्यात्मिक साधना का उद्देश्य बाह्य विषयों में भटकना नहीं, बल्कि आत्मा के शुद्ध स्वरूप की अनुभूति करना है। आगम स्वाध्याय में हितमित भाषी हितेन्द्र ऋषिजी, मेवाड़ गौरव रविन्द्र मुनिजी, धवल ऋषिजी, नवदीक्षित महक ऋषिजी, उपप्रवर्तिनी दिव्यज्योतिजी 'अर्पणा', महासती सुचेताजी, साध्वी पीयूषदर्शनाजी, यश सुशिष्या महासती ज्ञानकंवरजी, साध्वी मणिप्रभाजी, साध्वी पुष्पलताजी एवं साध्वी सुप्रभाजी सहित साधु-साध्वीवृंद उपस्थित रहे। वहीं श्रावक-श्राविकाओं के साथ यश विहार के अध्यक्ष हिम्मतसिंह गांग, राजेन्द्रसिंह मारू, दिनेश गौखरू, भूपेन्द्रसिंह पंगारिया, सुशील चपलोत, गजेन्द्रसिंह पोखरणा तथा शांति भवन के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद चीपड़ सहित अनेक श्रद्धालुओं ने आगमिक स्वाध्याय का लाभ प्राप्त किया। यश विहार के अध्यक्ष हिम्मतसिंह गांग ने बताया कि युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी महाराज एवं साधु-साध्वीवृंद के सान्निध्य में 14 जून, रविवार को प्रातः 7:30 से 8:30 बजे तक यश विहार में सामूहिक महामंत्र नवकार जाप का आयोजन किया जाएगा। साथ ही 19 जुलाई को युवाचार्यश्री एवं साधु-साध्वीवृंद का शांति भवन, भोपालगंज में भव्य चातुर्मास मंगल प्रवेश होगा।

जैन बंधुओं को रोजगार दिलाने के लिए टैलेंट ब्रिज प्रॉस्पेरिटी फाउंडेशन की पहल

1200 से अधिक युवाओं को मिला रोजगार, 70 हजार से अधिक लोग जुड़े

मुरैना/अहमदाबाद. शाबाश इंडिया

जैन समाज के युवाओं को रोजगार एवं बेहतर करियर अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से टैलेंट ब्रिज प्रॉस्पेरिटी फाउंडेशन द्वारा एक सराहनीय पहल की गई है। जैन उद्योगपतियों और समाज के युवाओं की सहभागिता से संचालित इस अभियान के माध्यम से अब तक 1200 से अधिक युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में सफलतापूर्वक रोजगार मिल चुका है, जो समाज के लिए गर्व का विषय माना जा रहा है। समाज के युवाओं और उद्योग जगत के बीच मजबूत समन्वय स्थापित करने के लिए फाउंडेशन ने ''जैन टैलेंट ब्रिज'' नामक मोबाइल एप्लिकेशन विकसित किया है। इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से जैन समाज के युवा, फ्रीलांसर और कंपनियों को एक ही मंच पर जोड़ने का प्रयास किया गया है, ताकि प्रतिभाशाली युवाओं को उनकी योग्यता के अनुरूप अवसर मिल सकें और उद्योगों को योग्य मानव संसाधन उपलब्ध हो सके। फाउंडेशन के अनुसार अब तक इस पहल से 70 हजार से अधिक लोग जुड़ चुके हैं। इनमें से 30 हजार से अधिक लोगों ने टैलेंट ब्रिज एप्लिकेशन डाउनलोड किया है, जबकि शेष सदस्य विभिन्न व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से जुड़े हुए हैं। यह एप्लिकेशन वर्तमान में आईओएस (एप्पल ऐप स्टोर) और गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। मोबाइल एप्लिकेशन में हिंदी, गुजराती और अंग्रेजी भाषाओं की सुविधा दी गई है। इसमें जॉब सीकर, कंपनी और फ्रीलांसर तीनों श्रेणियों के उपयोगकर्ता अपना पंजीकरण कर सकते हैं। युवा अपनी शैक्षणिक योग्यता, अनुभव और करियर प्रोफाइल दर्ज कर सकते हैं, जबकि कंपनियां अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त उम्मीदवारों की तलाश कर सकती हैं। टैलेंट ब्रिज प्लेटफॉर्म के माध्यम से बड़ी संख्या में युवाओं और नियोक्ताओं ने पंजीकरण कराया है। इस पहल ने अनेक युवाओं को अपने करियर की नई शुरूआत करने का अवसर प्रदान किया है, वहीं विभिन्न उद्योगों और व्यावसायिक संस्थानों को योग्य एवं प्रशिक्षित प्रतिभाएं उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने बताया कि टैलेंट ब्रिज का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि समाज के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उनकी प्रतिभा को सही मंच प्रदान करना भी है। उनका मानना है कि जैन उद्योगपतियों और उद्यमशील युवाओं की संयुक्त भागीदारी से यह पहल समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण साबित होगी। फाउंडेशन ने बताया कि आगामी समय में इस प्लेटफॉर्म का विस्तार गुजरात के साथ-साथ देश के अन्य राज्यों और शहरों तक करने की योजना है, ताकि अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराए जा सकें।

> जैन उद्योगपतियों और उद्यमशील युवाओं की संयुक्त भागीदारी से यह पहल समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण साबित होगी।

धर्मनगरी किशनगढ़ में आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के चातुर्मास की प्रबल संभावना, समाज में उत्साह का माहौल

किशनगढ़. शाबाश इंडिया। गणाचार्य आचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, चर्या शिरोमणि पट्टाचार्य आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंघ के वर्ष 2026 के पावन चातुर्मास को धर्मनगरी किशनगढ़ में आयोजित कराने के उद्देश्य से श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत, किशनगढ़ के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य एवं समाजजन इटावा के लिए रवाना हुए। प्रतिनिधिमंडल का उद्देश्य पट्टाचार्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के समक्ष किशनगढ़ नगर की ओर से वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु विनम्र निवेदन प्रस्तुत करना है। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठजनों, युवा वर्ग एवं श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह और श्रद्धाभाव देखने को मिल रहा है। धर्मनगरी किशनगढ़ में इन दिनों आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के संभावित चातुर्मास को लेकर व्यापक चर्चा का माहौल है। नगर के धर्मप्रेमी बंधुओं के बीच यह विषय विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है और चारों ओर हर्ष एवं उल्लास का वातावरण व्याप्त है। समाजजनों का मानना है कि यदि आचार्य श्री का चातुर्मास किशनगढ़ में संपन्न होता है, तो यह समस्त क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक एवं सौभाग्यपूर्ण अवसर सिद्ध होगा। चातुर्मास के माध्यम से धर्म प्रभावना, संस्कार संवर्धन, स्वाध्याय, तप एवं आध्यात्मिक जागरण को नई दिशा मिलेगी तथा समाज में धार्मिक चेतना और अधिक सुदृढ़ होगी।

किशनगढ़ के श्रद्धालु एवं समाजजन पूर्ण श्रद्धा और उत्सुकता के साथ आचार्य भगवंत पट्टाचार्य आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज के श्रीमुख से अनुकूल आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वर्ष 2026 का चातुर्मास धर्मनगरी किशनगढ़ में संपन्न होने की मंगलकामना कर रहे हैं। चर्या शिरोमणि पट्टाचार्य आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंघ को किशनगढ़ चातुर्मास हेतु निवेदन करने के लिए श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश बैद के नेतृत्व में जीतू पाटनी, मुकेश काला, राजेश पाटनी, राजू सोगानी, पदमचंद गंगवाल, राकेश पाटोदी, युवराज पाटनी, मोहित बड़जात्या, नितिन गोधा, प्रकाश बड़जात्या, कैलाश कासलीवाल, सुरेंद्र गोधा, मनीष बड़जात्या, धर्मचंद गोधा, महावीर ठोलिया, पदम बड़जात्या सहित अनेक समाजजन इटावा के लिए रवाना हुए।

26 जून को फरीदाबाद में होगा नशामुक्त हरियाणा अभियान का समापन : एडीजीपी संजय कुमार

सिरसा से शुरू हुआ 15 दिवसीय राज्यव्यापी जागरूकता अभियान, युवाओं को नशे से दूर रखने पर विशेष जोर

ऐलनाबाद. शाबाश इंडिया। हरियाणा को नशामुक्त बनाने के उद्देश्य से राज्यव्यापी जागरूकता अभियान का शुभारंभ गुरुवार को चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा से किया गया। 11 जून से 26 जून तक चलने वाले इस 15 दिवसीय ह्लड्रग डी-एडिक्शन अवेयरनेस प्रोग्रामह्व का उद्घाटन अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) संजय कुमार ने किया। अभियान का समापन 26 जून को अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ दुरुपयोग एवं अवैध तस्करी विरोधी दिवस के अवसर पर फरीदाबाद में होगा। इस अवसर पर एडीजीपी संजय कुमार ने कहा कि नशे के खिलाफ यह लड़ाई केवल पुलिस या प्रशासन की नहीं, बल्कि पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि युवाओं को नशे की गिरफ्त में जाने से बचाने के लिए जागरूकता सबसे प्रभावी माध्यम है और हर नागरिक को इस अभियान का सक्रिय सहभागी बनना चाहिए।

युवाओं को नशे से बचाने के लिए जागरूकता पखवाड़ा

संजय कुमार ने कहा कि हरियाणा पुलिस द्वारा 11 जून से 26 जून तक "नशामुक्त हरियाणा जागरूकता पखवाड़ा" चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और उन्हें शिक्षा, खेल, नवाचार एवं रचनात्मक गतिविधियों की ओर प्रेरित करना है। उन्होंने कहा कि नशा व्यक्ति की प्रतिभा, परिवार की खुशियों और राष्ट्र की प्रगति को प्रभावित करता है।

प्रदेशभर में होंगे जनजागरूकता कार्यक्रम

उन्होंने बताया कि अभियान के तहत प्रदेश के विभिन्न जिलों में व्यापक जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराया जाएगा और स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। उन्होंने आमजन से अपील की कि नशा तस्करी में संलिप्त व्यक्तियों की सूचना हरियाणा पुलिस को देकर अभियान में सहयोग करें।

नशे की सप्लाई चेन तोड़ने पर विशेष फोकस

एडीजीपी ने कहा कि हरियाणा में नशीले पदार्थों का उत्पादन नहीं होता, बल्कि इनकी आपूर्ति सीमावर्ती राज्यों एवं अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क के माध्यम से की जाती है। इस सप्लाई चेन को तोड़ने के लिए हरियाणा पुलिस लगातार प्रभावी कार्रवाई कर रही है। साथ ही युवाओं को नशे की ओर धकेलने वाले तत्वों के खिलाफ भी सख्त कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

अपराध नियंत्रण में मिले सकारात्मक परिणाम

मीडिया से बातचीत में संजय कुमार ने बताया कि पिछले पांच वर्षों के अपराध आंकड़ों के विश्लेषण से विभिन्न श्रेणियों के अपराधों में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है। विशेष रूप से वर्ष 2022 की तुलना में 2025-26 के दौरान महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में गिरावट देखने को मिली है। उन्होंने कहा कि हरियाणा पुलिस की इमरजेंसी रिस्पॉन्स व्हीकल (ईआरवी) का प्रतिक्रिया समय भी पहले की तुलना में काफी बेहतर हुआ है, जिससे आपात स्थितियों में नागरिकों को त्वरित सहायता मिल रही है। इसके अलावा स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) द्वारा गैंगस्टरों एवं संगठित अपराधियों के विरुद्ध लगातार प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। यह राज्यव्यापी अभियान 11 जून को चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा से प्रारंभ हुआ। इसके तहत 12 जून को आईटीआई फतेहाबाद, 15 जून को पंचकूला, 16 जून को यमुनानगर, 17 जून को पानीपत, 18 जून को कैथल, 20 जून को झज्जर, 22 जून को सोनीपत, 23 जून को गुरुग्राम तथा 26 जून को फरीदाबाद में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। फरीदाबाद में अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ दुरुपयोग एवं अवैध तस्करी विरोधी दिवस के अवसर पर अभियान का समापन होगा।

किसानों के मसीहा स्व. राजेश पायलट की 26वीं पुण्यतिथि प्रेरणा दिवस के रूप में मनाई गई

नगर कांग्रेस कमेटी नसीराबाद ने शहीद स्मारक पर अर्पित की श्रद्धांजलि

नसीराबाद. शाबाश इंडिया। किसानों के मसीहा, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता स्वर्गीय राजेश पायलट की 26वीं पुण्यतिथि नगर कांग्रेस कमेटी नसीराबाद द्वारा प्रेरणा दिवस के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाई गई। फ्रामजी चौक स्थित शहीद स्मारक पर आयोजित कार्यक्रम में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम का आयोजन नगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष योगेश परिहार के नेतृत्व में तथा श्रीनगर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित कार्यकर्ताओं ने स्व. राजेश पायलट के किसान हितैषी योगदान, जनसेवा और संघर्षपूर्ण जीवन को स्मरण करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। नगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष योगेश परिहार ने कहा कि स्वर्गीय राजेश पायलट का व्यक्तित्व और कृतित्व कांग्रेस कार्यकताओं एवं युवाओं के लिए सदैव प्रेरणास्त्रोत रहेगा। किसानों, मजदूरों और आमजन के अधिकारों की रक्षा के लिए उनके द्वारा किया गया संघर्ष हमेशा याद रखा जाएगा। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में सम्पत सिंह राठौड़, रंजन वर्मा, सुभाष सांखला, सलमू भाई, आमिर खान, एडवोकेट गोवर्धन गुर्जर, विजय जैन, अशोक अग्रवाल, भंवर गुर्जर, त्रिलोक गुर्जर, दिलीप गोयल, प्रदीप सिंह राठौड़, संदीप सिंह राठौड़, बंटी पथरिया, राधेश्याम, शंभू सिंह गुर्जर सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ओसवाल संस्कार कार्निवल: व्यक्तित्व निखार के साथ संस्कारित होंगे बच्चे, 17 जून से होगा शुभारंभ

उदयपुर. शाबाश इंडिया। ओसवाल सभा उदयपुर एवं महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति के संयुक्त तत्वावधान में बच्चों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से ''ओसवाल संस्कार कार्निवल-2026'' का आयोजन 17 से 20 जून तक महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति, अंबामाता परिसर में किया जाएगा। शिविर के पोस्टर का विमोचन ओसवाल भवन, मुखर्जी चौक में किया गया। ओसवाल सभा अध्यक्ष प्रकाशचंद्र कोठारी ने बताया कि चार दिवसीय शिविर का संयोजन ओसवाल बहु प्रकोष्ठ द्वारा किया जाएगा। सचिव डॉ. प्रमिला जैन ने कहा कि कार्निवल का उद्देश्य बच्चों में धार्मिक संस्कार, आत्मविश्वास, रचनात्मकता और जीवन मूल्यों का विकास करना है। बहु प्रकोष्ठ अध्यक्ष वंदना दक के अनुसार 7 से 18 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे इसमें भाग ले सकेंगे। महामंत्री रचिता मोगरा ने बताया कि शिविर में धार्मिक अध्ययन के साथ व्यक्तित्व विकास, आर्ट एंड क्राफ्ट, नृत्य, संगीत, सांस्कृतिक गतिविधियां, ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं और मनोरंजक खेल आयोजित किए जाएंगे। प्रतिभागियों के लिए पौष्टिक नाश्ते, स्वादिष्ट भोजन तथा आकर्षक उपहारों की भी व्यवस्था रहेगी। आयोजकों के अनुसार ''पहले आओ-पहले पाओ'' के आधार पर केवल 120 बच्चों का पंजीकरण किया जाएगा। पंजीकरण शुल्क 120 रुपये निर्धारित किया गया है तथा प्रतिभागियों को सामायिक उपकरण साथ लाना अनिवार्य होगा। सभा पदाधिकारियों ने अभिभावकों से अधिकाधिक बच्चों को इस संस्कार शिविर से जोड़ने का आह्वान किया।

उपाध्याय विकसंत सागर महाराज ससंघ का निवाई से पीपलू-टोंक के लिए मंगल विहार

निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में आचार्य श्री विराग सागर महाराज के शिष्य उपाध्याय श्री 108 विकसंत सागर महाराज ससंघ का गुरुवार को निवाई से पीपलू एवं टोंक के लिए श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मंगल विहार संपन्न हुआ। विहार के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने जयघोषों के बीच गुरुवर को भावभीनी विदाई दी। जैन समाज के प्रवक्ता विमल पाटनी एवं सुनील भाणजा ने बताया कि उपाध्याय श्री विकसंत सागर महाराज ससंघ ग्रीष्मकालीन प्रवास के दौरान निवाई स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन अग्रवाल मंदिर में विराजमान थे। विहार से पूर्व श्रद्धालुओं ने पूजा-अर्चना कर गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर सुशील जैन (आरामशीन), विष्णु बोहरा, गोपाल कठमाणा, नवरत्न टोंग्या, विमल सोगानी, शंभु कठमाणा, अशोक भाणजा, लालचंद झिराणा, अनंत जैन, कमलेश झिलाय, कमल पहाड़ी, विमल बगड़ी, रवि भाणजा, संजय प्रेस, नरेश हथौना, विमल जौंला, विजय टोंग्या, अनिता छाबड़ा, विजया टोंग्या, उर्मिला सोगानी सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे और जयघोषों के साथ गुरुचरणों में श्रद्धा अर्पित की। विहार से पूर्व उपाध्याय श्री विकसंत सागर महाराज ससंघ ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए धर्म, संयम और सदाचार के मार्ग पर चलने का संदेश दिया तथा सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। गुरुवार को ससंघ का मंगल विहार श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन अग्रवाल मंदिर से प्रारंभ होकर इंद्रा कॉलोनी, वृद्धाश्रम, काली का बाग रोड, गंगा-जमुना गार्डन, बसंत विहार कॉलोनी एवं टोंक रोड होते हुए बरथल पहुंचा। रात्रि विश्राम के उपरांत ससंघ रजवास गांव होते हुए बगड़ी-पीपलू के लिए प्रस्थान करेगा।

दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल
एवम्
महिलाँचल राजस्थान के द्वारा
दशम् मासिक पूजन विधान

शनिवार, 13 जून 2026
प्रातः 7.30 बजे से 11 बजे तक
आप सभी सादर आमंत्रित है, कृपया पधारकर धर्म लाभ लेवें।

श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर
हल्दी घाटी मार्ग सेक्टर -17,
प्रताप नगर जयपुर

कार्यक्रम परामर्शक : सुरेन्द्र पांडया, राष्ट्रीय महामंत्री
मुख्य समन्वयक : राजेश बड़जात्या, अंचल कार्याध्यक्ष

सहयोगी- प्रबंध समिति श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर
धर्मेंद्र सेठी (अध्यक्ष) श्री आदिनाथ जैन सेवा समिति
अनिल कुमार जैन (BSNL) इकाई अध्यक्ष
लवनेश बगडा इकाई मंत्री
दीपा गोधा महिला इकाई अध्यक्ष
प्रज्ञा जैन महिला इकाई मंत्री

:: आयोजक ::
दिगम्बर जैन महासमिति महिलाचंल राजस्थान
शकुंतला बिंदायक्या अध्यक्ष
सुनीता जैन मंत्री
उर्मिला जैन कोषाध्यक्ष
एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य दिगम्बर जैन महासमिति महिलांचल राजस्थान

:: निवेदक::
दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल
अनिल जैन IPS अंचल अध्यक्ष
उत्तम चन्द पांड्या अंचल निवर्तमान अध्यक्ष
महावीर बाकलीवाल अंचल महामंत्री
रमेश चन्द सोगानी अंचल कोषाध्यक्ष

सादर आमंत्रण

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस काउंटडाउन कार्यक्रम 2026

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से
राजस्थान हॉस्पिटल (RHL), जयपुर
में आयोजित समारोह में सपरिवार पधारकर योग के
इस महोत्सव में सहभागी बनें।

- **दिनांक** : 14 जून 2026 (रविवार)
- **समय** : प्रातः 6:30 बजे
- **स्थान** : राजस्थान हॉस्पिटल (RHL), वर्ल्ड ट्रेड पार्क के सामने, मिलाप नगर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

आइए, स्वस्थ जीवन और योगमय भारत के संकल्प को सशक्त बनाएं

स्वस्थ भारत - समर्थ भारत

आग्रह : संभव हो तो सफेद टी-शर्ट धारण करके आये।

सादर,

डॉ. एस. एस. अग्रवाल
चेयरमैन, स्वास्थ्य कल्याण समूह
चेयरमैन, राजस्थान हॉस्पिटल (RHL), जयपुर

डॉ. वीरेन्द्र सिंह
अध्यक्ष
राजस्थान हॉस्पिटल (RHL), जयपुर

अहिंसा परमो धर्मः

दिगम्बर जैन महासमिति
राजस्थान अंचल

के महामंत्री
श्री महावीर जी - ललिता जी बाकलीवाल
को उनके वैवाहिक वर्षगांठ पर

हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई

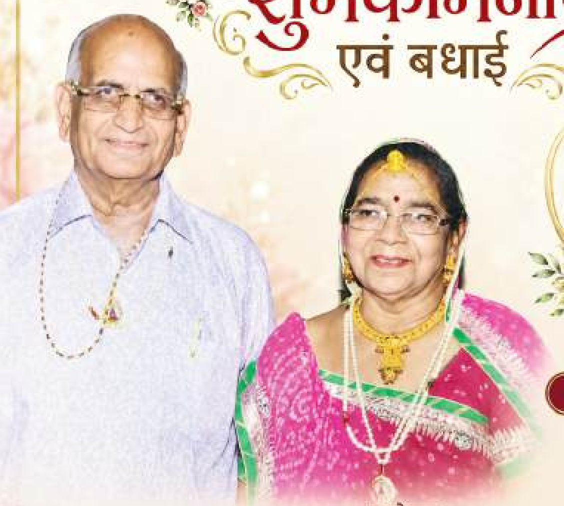

Happy WEDDING ANNIVERSARY

दिनांक: 12 जून 2026

शुभेच्छु
समस्त दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल के सदस्य

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फैडरेशन राजस्थान रीजन जयपुर
के तत्वावधान में
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप जयपुर मैन के द्वारा

64 सिद्धि मंत्रों से युक्त दीपकों द्वारा

श्री वर्धमान स्त्रोत पाठ

शनिवार, 13 जून 2026
रात्रि 7.30 बजे से

स्थान : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
भट्टारक जी की नसिया, जयपुर

आप सभी सादर आमंत्रित है, कृपया पधारकर धर्म लाभ लेवें।

कार्यक्रम ड्रेस कोड : पुरूष वर्ग - सफेद कुर्ता पायजामा/पेंट शर्ट, महिला वर्ग - केसरिया/पीली साड़ी

:: आयोजक ::
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप जयपुर मैन

अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
धनु कुमार इंदु जैन	हीरा चन्द शशि बेद	विनय कुमार छाबड़ा

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप जयपुर मैन

:: निवेदक ::
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फैडरेशन राजस्थान रीजन, जयपुर

सुनील-सुमन बज	अनिल-शशि जैन	राजेश-सीमा बड़जात्या	प्रमोद-सोनल जैन	नीरज-रेखा जैन
अध्यक्ष	संस्थापक अध्यक्ष	निवर्तमान अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	सचिव